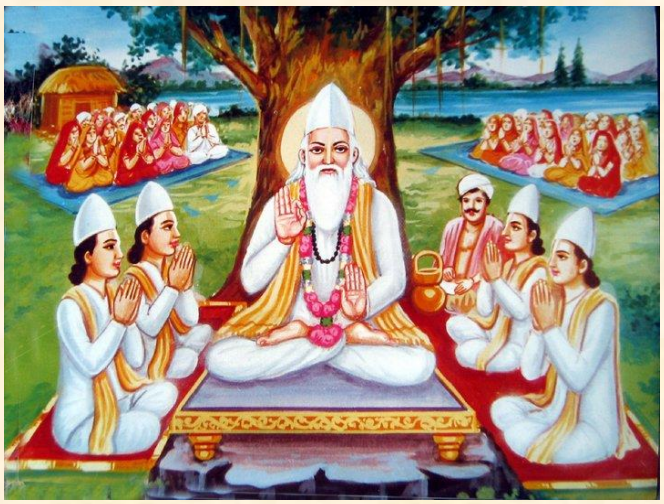

"बड़े बडाई ना करै, बड़े न बोले बोल।
रहिमन हीरा कब कहे,लाख टके मेरा मोल।।

अर्थ-----

जो सचमुच बड़े होते है, वे अपनी बडाई नहीं किया करते , बड़े-बड़े बोल नहीं बोला करते।हीरा कब कहता है कि मेरा मोल लाख टके का है।

रहीम दास जी का यह दोहा आज के परिवेश में बिल्कुल सही बैठता हैं , आजकल सभी बडी-बडी बातें बनाकर अपनी तारीफ के पुल बांधा करते हैं । अपनी बडाई करना आज जैसे इक रिवाज बन गया है।बडी-बडी बाते करना झूठ बोलना समाज में एक बीमारी की तरह फैल रहा हैं ।

लेकिन जो सचमुच बड़े होते है वो किसी की तारिफ के मोहताज नहीं होते है । महान लोगों की अपनी एक अलग ही अहमियत होती है। उनकी पहचान उनकी योग्यता से होती है और इसी से ही वो प्रशंसा के पात्र बनते है।

इसलिए अपने मुख से अपनी तारीफ नहीं करनी चाहिए और न ही दूसरों के मुख से अपनी झूठी तारीफ सुननी चाहिए अगर आप योग्य है तो लोग आपको खुद पहचानेगे क्यूंकि योग्यता किसी से छिपती नहीं है ।

CS Praveen Soni
Central Council Member &
Chairman, ICSI-CCGRT